राष्ट्र जागरण का शंखनाद

शाश्वत हिन्दू गर्जना

शाश्वत हिन्दू गर्जना
स्वयमेव मृगेन्द्रता
महाकौशल प्रांत

वर्ष : 30 माह : दिसम्बर 2023 सहयोग : ₹ 10

धर्म और विज्ञान का अद्भुत संयोग सिल्क्यारा सुरंग से निकले सभी श्रमवीर

जननायक टंट्या मामा

सिल्क्यारा सुरंग से सुरक्षित निकले सभी श्रमवीर

धर्म, विज्ञान और कठिन परिश्रम का अद्भुत संयोग

उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले के सिल्क्यारा सुरंग में 17 दिन से फंसे 41 श्रमिकों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया। सभी श्रमिक सिल्कायारा सुरंग के भीतर फंसे हुए थे। सिल्कायारा से बरकोट के बीच निर्माणाधीन सुरंग का एक भाग 12 नवंबर को ढह जाने के कारण सभी श्रमिक सुरंग में फंस गए थे। श्रमिकों को बाहर निकालने के लिए राज्य सरकार और केंद्र सरकार की सभी एजेंसियों, अधिकारियों और कर्मचारियों ने बचाव मिशन को सफल बनाने के लिए युद्धस्तर पर काम किया। फंसे हुए श्रमिकों को भोजन, ऑक्सीजन संपर्क के लिए फोन एक पाइप लाइन के माध्यम से दिये गये थे। श्रमिकों और उनके परिवारजनों ने सुरंग से सुरक्षित बाहर निकाले जाने पर केंद्र और राज्य सरकार के प्रति आभार व्यक्त किया।

रैट माईनर्स ने दिखाया कमाल :

उत्तरकाशी सुरंग से 41 श्रमिकों को बाहर निकालने में रैट माइनर्स के प्रयासों ने एक बार फिर से भारत की कौशल क्षमता पर विश्वास बढ़ा दिया है। रैट माईनर्स यानि वे लोग जो चूहे की भांति बारीक खुदाई करने में सक्षम होते हैं। इनकी कार्यकुशलता का भी इस अभ्यान में महत्वपूर्ण योगदान रहा जिन्होंने 21 घंटे के अंदर 10 से 15 मीटर तक हाथों से खुदाई कर बचाव अभियान को सफल बनाने में अपनी अहम भूमिका निभाई। इस रैट माईनर्स के कार्य में बुंदेलखण्ड के 5 श्रमवीरों का विशेष योगदान रहा।

प्रधानमंत्री मोदी जी सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर लिखाः

''उत्तरकाशी में हमारे श्रमिक भाइयों के रेस्क्यू ऑपरेशन की सफलता हर किसी को भावुक कर देने वाली है। सुरंग में जो साथी फंसे हुए थे, उनसे मैं कहना चाहता हूँ कि आपका साहस और धैर्य हर किसी को प्रेरित कर रहा है।'' मैं आप सभी की कुशलता और उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूँ। यह अत्यंत संतोष की बात है कि लंबे इंतजार के बाद अब हमारे ये साथी अपने प्रियजनों से मिलेंगे। इन सभी के परिजनों ने भी इस चुनौतीपूर्ण समय में जिस संयम और साहस का परिचय दिया है, उसकी जितनी भी सराहना की जाए वो कम है। मैं इस बचाव अभियान से जुड़े सभी लोगों के जज्बे को भी सलाम करता हूँ। उनकी बहादुरी और संकल्प-शक्ति ने हमारे श्रमिक भाइयों को नया जीवन दिया है। इस मिशन में शामिल हर किसी ने मानवता और टीम वर्क की एक अद्भुत मिसाल कायम की है।

दुनिया ने देखा बाबा बौखनाग चमत्कार :

ज्ञातव्य है कि सुरंग बनाने वाली कंपनी ने 2019 में क्षेत्र देवता लोकदेवता बाबा बौखनाग के मंदिर के साथ छेड़छाड़ की थी और उसे तोड़ दिया था। इसे वर्तमान में हुए सुरंग की दुर्घटना को स्थानीय रहवासी बाबा बौखनाग का प्रकोप मान रहे थे। तत्पश्चात बचाव कार्य के समय स्थानीय मान्यताओं के अनुरूप बाबा बौखनाग की मनौती की माँग उठी। पुजारी को बुलाकर स्थानीय परम्परानुसार सुरंग के समीप बाबा बौखनाग का अस्थायी मंदिर बनाया गया। यहाँ उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुस्कर सिंह धामी और अन्तर्राष्ट्रीय सुरंग और अंडरग्राउंड स्पेस एसोसिएशन के अध्यक्ष अर्नोल्ड डिक्स ने बाबा बौखनाग के समक्ष पूजन अर्चन कर कुशलक्षेम प्रार्थना की थी। मान्यतानुसार बाबा बौखनाग की मनौती के बाद यह अभियान सफल हुआ और सभी श्रमिकों को सुरंग से सकुशल बाहर निकाला गया। अर्थात् इस घटनाक्रम के बाद एक बार फिर से भारत में दैवीय चमत्कारों के प्रति आस्था दृढ़ हुई है। लोगों ने एक स्वर में इस बात को पुनः दोहराया है कि स्थानीय परम्पराओं में पूजे जाने वाले- लोक देवता, ग्राम देवता, स्थान देवता, खेर देवता आज भी समाज की रक्षा करते हैं और उन पर कृपा बनाए रखते हैं।

❑❑❑

शाश्वत हिन्दू गर्जना

(मासिक)

महाकौशल प्रांत
वर्ष 30 अंक - 11
दिसम्बर 2023
विक्रमाब्द् - 2080
युगाब्द - 5125

संपादक
डॉ. किशन कछवाहा

सह-संपादक
डॉ. नुपूर निखिल देशकर

कार्यकारी-संपादक
कृष्ण मुरारी त्रिपाठी 'अटल'

सलाहकार संपादक
डॉ. यतीश जैन
चंद्रशेखर पचौरी

प्रकाशक
नरेन्द्र जैन
विश्व संवाद केन्द्र
महाकौशल न्यास, जबलपुर

सम्पर्क
प्लॉट नं.1, म.नं. 1692
नव आदर्श कॉलोनी,
गढ़ा मार्ग, जबलपुर
फोन-0761-4006608

मुद्रक
ग्रेनेडियर्स प्रिंटिंग प्रेस
जबलपुर
फोन : 0761-2620184

संपादकीय...

'स्व' आधारित राष्ट्रबोध और शत्रुबोध के साथ समाज जीवन में आगे बढ़ें

कैलेण्डर वर्ष 2023 अपनी पूर्णता की बेला में आ पहुंचा है। वर्ष भर हम सबने व्यक्तिगत जीवन से लेकर सामाजिक जीवन में अनेकानेक उतार चढ़ाव देखे हैं। देश और समाज को विभिन्न संकटों का निवारण और संकटों पर विजय प्राप्त करते हुए देखा है। अनेकानेक उपलब्धियां देश के हिस्से में आई हैं और प्रगति के साथ कदमताल करते हुए महान ऋषियों एवं पूर्वजों के भारत को विश्व इतिहास रचते देखा है। वसुधैव कुटुम्बकम् पर आधारित जी 20 समूह की अध्यक्षता, सैन्य सुरक्षा, विकास कार्य, नागरिक कानूनों में सुधार, नारी शक्ति वंदन अधिनियम, चन्द्रयान 3 की सफलता के साथ खेल एवं वैज्ञानिक क्षेत्रों में हमने युगान्तरकारी परिवर्तन देखे हैं। श्रीराम जन्मभूमि में भव्य श्रीराम मंदिर की पूर्णता के साक्षी बनते हुए भारत के सांस्कृतिक उन्मेष का सूर्योदय होते हुए भी हम सब देख ही रहे हैं। इसके साथ ही वैश्विक राजनीति में भारत को विश्व नेतृत्वकर्ता यानी 'विश्व गुरु' के रूप प्रतिष्ठित पुर्नस्थापित होते हुए हम सब आह्लादित अनुभूत करते होंगे। वस्तुतः समाज जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं होगा जहाँ राष्ट्र ने नवीन चेतना और स्फूर्ति की गौरव पताका न फहराई हो। विविध क्षेत्रों के विद्वानों, विषय विशेषज्ञों और नेतृत्वकर्ताओं के साथ-साथ देश के सशक्त राजनीतिक नेतृत्व ने राष्ट्र के विकास में अपनी अभूतपूर्व भूमिका का परिचय दिया है। राष्ट्र की समृद्धि एवं विश्व कल्याण की उदात्त भावना से ओत-प्रोत भारत पूर्वजों के संकल्पों और नवीन चैतन्यता के साथ अग्रसर हो चला है।

किन्तु इसके साथ ही राष्ट्र और समाज के मध्य विभाजन, वर्ग संघर्ष, नक्सलवाद, माओवाद, षड्यंत्र, हिंसा सहित अनेकानेक उत्पात मचाने वाली आसुरी शक्तियाँ भी राष्ट्र व समाज जीवन को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए आतुर हैं। आज वे संगठित गिरोह के माध्यम से साम, दाम दण्ड भेद को अपनाते हुए मुखौटा लगाकर चारो ओर गिध्द दृष्टि जमाए घूम रहे हैं। कन्वर्जन, लव-जिहाद, आतंकवाद, कुटुम्ब विखण्डन सहित सामाजिक जीवन के मूल्यों एवं आदर्शों को नष्ट करने के कुकृत्यों से समाज जूझ रहा है। ऐसे अनेकानेक देशविरोधी संविधान विरोधी कार्य वे सभी आसुरी शक्तियाँ निरन्तर करने पर जुटी हुई हैं। वर्तमान में भारत और भारतीयता के विरुद्ध ये हमले - सिनेमा, सोशल मीडिया, ओटीटी प्लेटफार्म, साहित्य , मीडिया, कला आदि के सभी माध्यमों से जारी हैं। इनका स्पष्ट उद्देश्य है भारत के 'स्व' और मूल्यादर्शों पर प्रहार कर आत्मविस्मृत कर देना।

ऐसे प्रगति एवं संकट के कालखण्ड में प्रत्येक व्यक्ति की - एक व्यक्ति, परिवार और समाज जीवन में भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। हमें यह समझना पड़ेगा कि हमारा 'स्व' क्या है ? स्व यानि प्रत्येक वह कार्य, विचार और दृष्टि जो भारत की अपनी है। जो भारत की महान परम्परा में वर्षों से सत्य, न्याय और धर्म पर आधारित है और हमारे सामाजिक जीवन का आदर्श है। अतएव हम सभी को अपने कार्यों एवं विचारों में 'स्व' के लिए प्रतिबद्ध होना पड़ेगा।

चाहे युवा हों, प्रौढ़ हों, वरिष्ठ हों, मातृशक्तियां और विद्यार्थी हों: सभी को कर्त्तव्य पथ पर बढ़ते हुए सचेत और सतर्क रहने की भी आवश्यकता है। माताओं बहनों को अपनी अहम भूमिका निभानी होगी ताकि एक ऐसी पीढ़ी का निर्माण हो सके जो राष्ट्रीयता से पल्लवित एवं पुष्पित हो। हमें वैज्ञानिक ढंग से भारतीयता के स्वत्वबोध के साथ अग्रसर रहना है। किन्तु अपने आस-पास होने वाले किसी भी षड्यंत्र एवं कृत्य को पहचानना और उसका मुखर प्रतिकार भी करना है। हमें संवैधानिक व्यवस्था के अन्तर्गत काम करते हुए राष्ट्र और समाज के शत्रुओं के ताबूत में अंतिम कील भी ठोंकनी है। क्योंकि जिस दिन एक एक व्यक्ति 'स्व' पर आधारित राष्ट्रबोध और शत्रुबोध को जीवन में उतार लेगा। उसी दिन से चहुंओर 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' का शाश्वत संदेश साकार होने लगेगा। ❑❑❑

सरकारी नियमों के बिना हलाल प्रमाणन प्रमाण पत्र : एक गम्भीर विषय

- प्रहलाद सबनानी
सेवा निवृत्त उप महाप्रबंधक, भारतीय स्टेट बैंक
psabnani@rediffmail.com

पिछले कुछ समय से भारत सहित, पूरे विश्व में इस्लाम मजहब के अनुयायियों के लिए हलाल प्रमाणन प्रमाण पत्र प्राप्त उत्पादों के उपयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। हालांकि हलाल प्रमाणन प्रमाण पत्र जारी करने के सम्बंध में कोई प्रक्रिया तय नहीं की गई है और न ही सरकारी तौर पर इस सम्बंध में कोई दिशा निर्देश जारी किए गए हैं, परंतु फिर भी भारत में हलाल प्रमाणन प्रमाण पत्र जारी करने का कार्य विभिन्न संस्थानों द्वारा धड़ल्ले से किया जा रहा है एवं कई विनिर्माण इकाईयों से भारी भरकम राशि हलाल प्रमाणन प्रमाण पत्र जारी करने के नाम पर ली जा रही है। जिन विनिर्माण इकाईयों ने यह प्रमाण पत्र नहीं लिया है उन पर भी दबाव बनाया जाता है कि वे अपने संस्थानों में इस्लाम मजहब के अनुयायियों की नियुक्ति करें। अब यह भी समझ से परे है कि फैशन, सौंदर्य साधनों, किराने के सामान, सब्जियों, वित्तीय सुविधाओं एवं ढाबे आदि जैसी गतिविधियों को हलाल प्रमाणन प्रमाण पत्र किस प्रकार प्रदान किया जा सकता है? इसी संदर्भ में उत्तर प्रदेश सरकार एवं सुप्रीम कोर्ट ने हलाल प्रमाणन प्रमाण पत्र जारी करने के सम्बंध में जांच के आदेश जारी किए हैं। इस्लाम मजहब के अनुयायियों के लिए हलाल शब्द बहुत महत्व भरा शब्द है। हलाल का आशय यह बताया जाता है कि मुस्लिम मतावलंबियों के लिए जो वस्तु वैध है वह हलाल है और जो वैध नहीं है वह हराम है। ऐसा भी बताया जाता है।

प्रारम्भ में इस्लाम-कुरान में माँसाहार, के साथ ''हलाल'' शब्द को जोड़ा गया था परंतु, अब तो हलाल को दैनिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के साथ जोड़ दिया गया है। जैसे हलाल मांस, हलाल फैशन एवं सौंदर्य के साधन, हलाल किराने का सामान, हलाल सब्जियाँ, हलाल वित्तीय सुविधाएँ, हलाल ढाबे, आदि आदि।

भारत की भी तीन प्रमुख संस्थाएँ - हलाल इंडिया, जमियत उलेमा हलाल फाउंडेशन, जमियत उलेमा ए हिंद हलाल ट्रस्ट इसके सदस्य रहे हैं। अब तो विश्व के लगभग सभी इस्लामी देशों एवं अन्य कई गैर इस्लामी देशों में भी हलाल प्रमाणन संस्थाओं का गठन किया जा चुका है। हलाल प्रमाणन संस्थाएं हलाल प्रमाणन प्रमाण पत्र जारी करने के पूर्व एक मोटी रकम विभिन्न वस्तुओं का उत्पादन करने वाली संस्थाओं से हलाल प्रमाणन प्रमाण पत्र जारी करने के बदले में लेती हैं। हलाल प्रमाणन प्रमाण पत्र जारी करने वाली इन संस्थाओं की आय आज करोड़ों अमेरिकी डॉलर में हो गई है। दीनार स्टैंडर्ड, द कैपिटल आफ इस्लामिक इकॉनमी और सलाम गेटवे द्वारा प्रकाशित स्टेट आफ ग्लोबल इस्लामिक इकॉनमी रिपोर्ट 2018-19 के अनुसार, हलाल अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों की आय अब अरबों डॉलर में पहुँच गई है ।

भारत में तो कई मुस्लिम बुद्धिजीवियों द्वारा पतंजलि संस्थान द्वारा निर्मित आयुर्वेदिक उत्पादों को मुस्लिम मजहब के अनुयायियों द्वारा उपयोग न करने के लिए कहा जाता है एवं केवल हलाल प्रमाणित वस्तुओं एवं सेवाओं के उपयोग हेतु ही प्रेरणा दी जाती है। भारत में मुस्लिम मतावलंबी चीनी सामान को बढ़ावा दे रहे हैं और जो भारत मुस्लिमों को सबसे अधिक सुविधाएँ देता है, उस सहिष्णु भारत के व्यापारियों का मुस्लिम मजहब वालों द्वारा विरोध किया जा रहा हैं। चीन में हलाल राशि इस्लाम को कुचलने के काम आती है, यूरोपीयन देशों में हलाल राशि वामपंथी- पूंजीपतियों के द्वारा वैश्विक षड्यंत्र के काम आती है और कुछ मुस्लिम देशों में हलाल की कुछ राशि इस्लामिक जिहाद के लिए काम आती है। इसलिए वैश्विक स्तर पर हलाल की राशि के प्रयोग के लिए नियम बनाए जा रहे हैं। उत्तरप्रदेश में लखनऊ के हजरतगंज थाने में हलाल सर्टिफिकेट देने वाली संस्थाओं के विरोध में ऐशबाग निवासी शैलेंद्र कुमार शर्मा ने एफआईआर दर्ज करायी है। उनका आरोप है कि ये संस्थाएँ लोगों की आस्था के साथ खिलवाड़ कर रही हैं। बिना किसी अधिकार के ये हलाल प्रमाण पत्र जारी कर अनुचित लाभ कमा रही हैं। इस धन का प्रयोग राष्ट्र विरोधी तत्वों और आतंकी संगठनों की फंडिग के लिए किया जा रहा है। आरोप यह भी है कि इन कंपनियों से जुड़े लोग वर्ग विशेष को प्रभावित करने के लिए कूटरचित प्रपत्रों का प्रयोग कर प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। ये कंपनियाँ उन उत्पादों के लिए भी हलाल प्रमाण पत्र जारी कर रही हैं, जो शुद्ध शाकाहारी की श्रेणी में आते हैं। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए उत्तर प्रदेश में हलाल प्रमाणित उत्पादन में प्रतिबंध लगा दिया गया है।

❑❑❑

थाईलैंड में विश्व हिंदू कांग्रेस का आयोजन

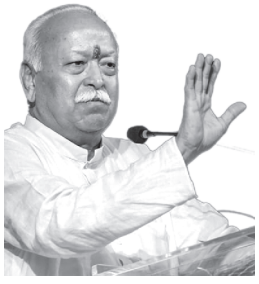

थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक में 24 से 26 नवंबर तक आयोजित हुई विश्व हिंदू कांग्रेस में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने को कहा कि- हमारी सभी हिंदू परंपराएं, बौद्धिक मतभेदों के बावजूद, 'धर्म' का उदाहरण हैं। साथ ही उन्होंने कहा कि भारत में सभी 'संप्रदायों' को अनुशासन का पालन करने के लिए खुद में सुधार करने की आवश्यकता है। साथ ही उन्होंने कहा कि आज की दुनिया सही राह पर नहीं है और लड़खड़ा रही है।

डॉ. मोहन भागवत ने आगे कहा कि दुनिया ने 2000 वर्षों से खुशी और शांति लाने के लिए बहुत सारे प्रयोग किए हैं। भौतिकवाद, साम्यवाद और पूंजीवाद का उपयोग भी सभी ने किया और विभिन्न धर्मों को आजमाया। उन्हें भौतिक समृद्धि मिली है, लेकिन फिर भी कोई संतुष्टि नहीं है। उन्होंने कहा- 'विश्व' एक परिवार है और हम सभी को 'आर्य' बनाएंगे। भौतिक सुख के सभी साधनों पर कब्जा पाने के लिए लोग एक-दूसरे से लड़ने और हावी होने की कोशिश करते हैं। हमने इसका अनुभव किया है ''

दुनिया है एकमत- भारत दिखाएगा रास्ता :

उन्होंने कहा, ''अब खासकर कोविड काल के बाद दुनिया ने पुनर्विचार करना प्रारंभ कर दिया है और ऐसा लगता है कि वे इस बात पर एकमत हैं कि भारत उन्हें रास्ता दिखाएगा क्योंकि भारत की यह परंपरा है। भारत पहले भी ऐसा कर चुका है। हमारे समाज और हमारे राष्ट्र का जन्म भी इसी उद्देश्य के लिए हुआ है। हम हर जगह जाते हैं और हर किसी के हृदय को छूते हैं। वे हमसे सहमत हो सकते हैं, सहमत नहीं भी हो सकते हैं, लेकिन हमें सभी के साथ जुड़ना होगा''

भारत के पास धर्म विजय का पथ :

डॉ. मोहन भागवत ने कहा, ''हमारे पास धर्म विजय है, वह विजय जो धर्म पर आधारित है। वह प्रक्रिया जो धर्म नियमों पर निर्भर करती है और इसका परिणाम भी धर्म है जो हमारा कर्तव्य है। एक और है ''धन विजय''। लोग भौतिक सुख के सभी साधन प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन इरादा नेक नहीं है, वे आत्म केंद्रित है। हमने ''असुर विजय'' का अनुभव किया है- उन्होंने अन्य समाजों पर आक्रमण किया, उन्होंने 5200 वर्षों तक शासन किया, और हमारी भूमि पर विनाश और कहर बरपाया. हमने 250 से अधिक वर्षों तक ''धन विजय'' का अनुभव किया है, जब भारत को लूटा गया''।

विश्व में समरसता के लिए जरूरी है भारत :

डॉ. मोहन भागवत ने सम्बोधन के दौरान कहा कि कुछ महीने पहले विश्व मुस्लिम परिषद के महासचिव भारत आए थे। उन्होंने भी अपने भाषणों में कहा था कि अगर हम चाहें तो विश्व में समरसता आ सकती है, जिसके लिए भारत जरूरी है। यह हमारा कर्त्तव्य है। हिंदू समाज अस्तित्व में भी इसी कारण आया। ❑❑❑

रोटरी साउथ ने जनजाति विद्यार्थियों को ठंड से बचाव के लिए सौंपे स्वेटर

रोटरी क्लब जबलपुर साउथ द्वारा शिक्षा के महत्व को प्रतिपादित करते हुए सेवाभारती महाकौशल द्वारा संचालित सेवा भारती आवासीय प्राथमिक माध्यमिक विद्यालय शबरी संस्कार केंद्र कोसमडीह जिला- डिंडोरी मध्य प्रदेश के 170 जनजाति बच्चों को ठंड से बचाव के लिए स्वेटर सौंपे गए। केशव कुटी जबलपुर में आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि की आसंदी से बोलते हुए जन अभियान परिषद मध्य प्रदेश के उपाध्यक्ष प्रख्यात अस्थि रोग विशेषज्ञ डॉ. जितेंद्र जामदार द्वारा रोटरी एवं सेवाभारती के सेवा प्रकल्पों के बारे में उपस्थित लोगों को अवगत कराया गया। क्लब अध्यक्ष रवि वैश्य ने रोटरी द्वारा ग्लोबल ग्रांट के माध्यम से जबलपुर के लिए स्थापित किए गए वृहत सेवा प्रकल्पों के बारे में जानकारी दी गई। आयोजन में प्रांत संघ चालक डॉ. प्रदीप दुबे, पूर्व अध्यक्ष प्रमोद वैश्य, अरविंद अग्रवाल, राकेश गिदरौनिया, संतोष जैन, सेवाभारती महाकौशल प्रांत संगठन मंत्री महेश सोनी, सचिव अनिल शर्मा, शबरी संस्कार केंद्र कोसमडीह के संचालक एवं विद्यार्थीगण उपस्थित थे।

❑❑❑

स्मरण करें श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन का संकल्प

500 वर्षों के सुदीर्घ संघर्षों के बाद श्रीराम जन्मभूमि अयोध्या में पौष, शुक्ल द्वादशी, विक्रम संवत 2080, सोमवार, 22 जनवरी 2024, गर्भगृह मे रामलला के नूतन विग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा का महापर्व सम्पन्न होने जा रहा है। श्रीराम मंदिर के निर्माण के लिए पांच सौ वर्षों में न जाने कितने वीर हुतात्माओं ने अपने प्राणोत्सर्ग कर दिए। रामलला के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। 1990 में लालकृष्ण आडवाणी के नेतृत्व में शुरू हुए रामजन्म भूमि आन्दोलन में ''रामलला हम आएंगे मंदिर वहीं बनाएंगे'' का उद्घोष करते हुए राष्ट्रव्यापी आन्दोलन चला था। इस दिशा में 6 दिसम्बर 1992 की वह ऐतिहासिक दिनांक जब हजारों कार सेवकों ने अपने प्राणों को हथेली पर रखकर बाबरी ढांचे का कलंक ध्वस्त कर रामलला के विग्रह की नींव रखी थी। लाखों कार सेवकों ने उस दिन अपने अदम्य साहस और धर्मनिष्ठा का अद्भुत परिचय दिया था।

तत्पश्चात 9 नवम्बर 2020 को सर्वोच्च न्यायालय ने रामजन्मभूमि के मालिकाना अधिकार को लेकर श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के पक्ष में ऐतिहासिक निर्णय सुनाया। 5 अगस्त 2021 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश भर के संत महात्माओं, विद्वतजनों एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत की उपस्थिति में राममंदिर निर्माण का भूमिपूजन किया था। श्री रामजन्मभूमि को निधि संकलन अभियान में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं विश्व हिन्दू परिषद् के कार्यकर्ताओं ने देश के कोने-कोने से राम मंदिर निर्माण के लिए धन संग्रह करने का अद्वितीय कार्य किया। उसी अनुरूप अब जब रामलला की नूतन विग्रह में प्राण-प्रतिष्ठा होने जा रही है, तब भी संघ एवं विहिप बजरंग दल के कार्यकर्ता देश के कोने-कोने में जाकर अक्षत चावल और आमंत्रण पत्र, राममंदिर का चित्र लेकर जा रहे हैं। इसी दिशा में महाकौशल प्रांत के 25000 गांवों और सभी शहरों के प्रत्येक घर में भी संपर्क किया जा रहा है। कार्यकर्ता अक्षत, आमंत्रण पत्र और राम मंदिर का चित्र लेकर घर घर जा रहे हैं।

सेवानिवृत्त आई.ए.एस. ने रामलला को अर्पित की सारी संपत्ति : आई.ए.एस. अधिकारी अयोध्या में 5 करोड़ रुपए से तैयार 151 किलो की स्वर्ण जड़ित रामचरित मानस स्थापित करवाएंगे मप्र कैडर के 1970 बैच के आई.ए.एस. अधिकारी एस. लक्ष्मीनारायण केन्द्र सरकार में गृह सचिव रह चुके हैं। इन्होंने अपनी जीवनभर की कमाई भगवान श्री राम को अर्पित कर दी। अयोध्या में रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा के बाद वे मूर्ति के सामने 5 करोड़ रूपए से तैयार 151 किलो की स्वर्ण जड़ित रामचरितमानस स्थापित करवाएंगे। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट ने उन्हें इसकी अनुमति प्रदान कर दी गई है।

महाकाव्य का 10 हजार 902 पदों वाला हर पन्ना तांबे का होगा, जिसे 24 कैरेट सोने में डुबोया जाएगा, फिर स्वर्ण जड़ित अक्षर लिखे जाएंगे। इसमें 140 किलो तांबा और 5 से 7 किलो सोना लगेगा। इसके अतिरिक्त सजावट के लिए रामचरितमानस पर अन्य धातुओं का भी प्रयोग होगा। तांबे पर लिखी सोने की परत वाली इस पुस्तक के लिए नारायण ने अपनी सारी संपत्ति बेचने और बैंक खातों को खाली करने का निर्णय लिया। इस रामचरित मानस को रामलला के चरणों के पास रखा जाएगा। पिछले दिनों सेवानिवृत्त नारायण अपनी पत्नि के साथ अयोध्या गये थे। ❑❑❑

फिल्म फेयर अवार्ड के लिए हुई नामित : बुंदेलखण्डी फिल्म

मुम्बई में आयोजित होने वाले प्रतिष्ठित फिल्म समारोह फिल्मफेयर में दमोह के कलाकारों द्वारा बनाई गई फिल्म ''इज हरदौल अलाइव'' (क्या हरदौल जिन्दा है-) को नॉमिनेशन मिला है। फिल्म फेयर के शॉर्ट फिल्म कैटेगरी में यह नॉमिनेशन मिला है। इस समारोह में विभिन्न प्रकार के अवार्ड दिए जाते हैं जिसमें बेस्ट एक्टर, बेस्ट फिल्म और पीपल्स चॉइस बेस्ड, फिल्म अवार्ड भी दिया जाता है जिसमें दमोह के लोगों ने लाला हरदौल पर बनी इस फिल्म को अपना वोट दिया है। बुंदेलखण्ड के ओरछा में बनी इस फिल्म को यह अवार्ड मिलेगा। दमोह में शिक्षक के रूप में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले डॉ. प्रो. रश्मि जेता के निर्देशन में बनी इस फिल्म की निर्माता उन्हीं की पत्नी श्रीमती रश्मि जेता है।

यह फिल्म ओरछा के लाला हरदौल के मुख्य किरदार पर आधारित है इस फिल्म में इतिहास को लेकर भ्रांतियाँ को समाप्त किया गया है अक्सर इतिहास में हर घटना के कारण और साक्ष्य को तलाश जाता है पर इस फिल्म में इस बात पर जोर दिया गया है कि कई बार इतिहास की हर घटना में साक्ष्य नहीं मिलने पर वे घटनाएं सही होती हैं वही लोकमान्यताओं का इतिहास भी एक सर्वमान्य इतिहास होता है तभी वह लम्बे समय तक जीवित रहता है। ❑❑❑

क्रान्तिवीर : जनजातीय नायक टंट्या मामा

सन् 1857 क्रांति के दिनों में सम्पूर्ण मालवा, निमाड़ में क्रांतिकारियों का जाल फैला था। खरगौन और उसके आसपास का क्षेत्र क्रांतिकारियों का प्रमुख केन्द्र था। जनजाति क्रांतिकारियों की श्रृंखलाबद्ध व्यवस्था अद्‌भुत थी। एक नायक के बलिदान होते ही दूसरा नायक मोर्चा थाम लेता था ताकि क्रांति अनवरत चलती रहे। इन भील जननायकों में टंट्या भील तो अपने शौर्य और पराक्रम से अलौकिक किम्वदन्ती बन गये। टंट्या भील का जन्म सन् 1842 के आसपास हुआ। मात्र 16 वर्ष की आयु में वह क्रांतिवीर हो गये। वह हजारों बहनों का भाई और तरुणों का मामा था। संकट में लोग टंट्या मामा को पुकारते। वह हवा की तरह आता, लोगों को शोषण से मुक्त करवाता और अगले मोर्चे पर चल देता। उसने अंग्रेजों के चाटूकार सेठ-साहूकारों के चंगुल से दीन-हीन गरीबों को मुक्ति दिलाई, अंग्रेजों से लगातार संघर्ष किया और जनयोद्धा बन गया। यही नहीं वन में शरण के लिए आये सैकड़ों स्वतंत्रता सेनानियों का वह आश्रयदाता भी था।

15 सितम्बर 1857 को उसकी भेंट क्रांति के महानायक तात्या टोपे से हुई। उसने तात्याटोपे से गुरिल्ला युद्ध का प्रशिक्षण प्राप्त किया। टंट्या के जीवन का एकमात्र उद्देश्य था शोषकों को दण्ड देना और हर गरीब को उसका हक दिलाना। उसने अंग्रेजों के विरुद्ध उस अग्नि को और प्रज्ज्वलित किया जो वनांचलों और पर्वतों की तहलटियों में बसे टोलों में उसके जन्म से भी पहले नादिर सिंह, चीलनायक, सरदार दशरथ, हिरिया, गौंडाजी, दंगलिया, शिवराम पेंडिया, सुतवा, उचेत सिंह और करजर सिंह आदि नायकों ने सुलगाई थी। टंट्या के आक्रामक मोर्चों से अंग्रेज बौखला गये। उसे पकड़ने के लिए पुलिस बिग्रेड तक की स्थापना कर दी गई पर अंग्रेजी फौज उस तक पहुँच न सकी। नर्मदा किनारे मध्यप्रदेश और गुजरात की पट्टी का शेर और झाबुआ वेस्ट के भीलों के आदर्श टंट्या को पकड़ना आसान न था। अंततः अंग्रेजों ने छल, बल का सहारा लिया, मानसिंह ने गद्दारी का इतिहास रचा। टंट्या को अंग्रेजों ने गिरफ्तार कर लिया।

उनकी गिरफ्तारी के बाद मुकदमा चला। एक जगह से दूसरी जगह जेलों में भेजा गया। अन्ततोगत्वा अदालत ने उन्हें मृत्यु दंड की सजा सुनाई। चूँकि निमाड़ में या नागपुर में फांसी देने पर संघर्ष की संभावना थी। अतः गुप्त रूप से उन्हें जबलपुर भेज दिया गया। पर यह बात भीलों को मालूम पड़ गई। अनेक भील जबलपुर पहुँच गये। वहाँ पर स्थानीय जनजातीय समाज का भारी समूह एकत्रित हो गया। जबलपुर स्टेशन से जेल तक ले जाना कठिन हो गया। टंट्या एक बार इस जेल से पलायन कर चुके थे। अतः इस बार विशेष सतर्कता बरती गई। स्टेशन से जेल के रास्ते भर पुलिस और सेना का पहरा था। टंट्या को स्टेशन से पीछे के रास्ते से निकाला गया तथा सीधे जेल के रास्ते में मोटर खड़ी करके उन्हें बैठाकर जेल के अंदर भेज दिया गया। 4 दिसंबर 1889 को सुबह के पहले ही उन्हें फांसी दे दी गई। गुप्त रूप से उनका अंतिम संस्कार किया गया। परंतु जनजातीय समाज के लोगों ने उस स्थल को खोज निकाला तथा उनकी अस्थियों को माँ नर्मदा में विसर्जित कर दिया। इस तरह निर्धनों के भगवान, अंग्रेज सरकार के शत्रु क्रांतिवीर टंट्या भील पंचतत्वों में विलीन होकर परमात्मा के पास चले गए।

विशेषः टंट्या मामा की सहायता धाराखेड़ी के राजा तखत सिंह किया करते थे। टंट्या उन्हें मालिक कहते थे। अंतिम समय में टंट्या की इच्छा थी कि उनका ताबीज एवं अष्टधातु के कड़े मालिक को दे दिये जाएँ। तद्‌नुसार तखत सिंह को वे कड़े और ताबीज दे दिये गये। अंग्रेजों से बचने टंट्या मामा राजा तखत सिंह की हवेली में रुकते थे। उस समय राजा की रियासत में 30 गाँव थे। राजा तखत सिंह की चौथी पीढ़ी के वंशज ठाकुर शिवचरण सिंह ने बताया कि कड़े और ताबीज हवेली में रखे थे, पर उन्होंने वे कड़े तथा अन्य सामान कुछ वर्षों पूर्व नर्मदा जी में विसर्जित कर दिये थे। ❑❑❑

वक्तव्य

सीएए देश का कानून है। इसे लागू होने से कोई नहीं रोक सकता। हम नागरिकता संशोधन कानूनन को हर हालत में लागू करेंगे।

अमित शाह
(केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री)

अगर अजमल कसब जिंदा नहीं पकड़ा जाता तो 26 नवम्बर 2011 को मुम्बई में हुई आतंकवादी हमले को भगवा आतंकवाद करार दे दिया जाता।

आर.एस.एन. सिंह
पूर्व रॉ अधिकारी

युग प्रवर्तक : महामना पं. मदनमोहन मालवीय

- डॉ. किशन कछवाहा

महामना पंडित मदनमोहन मालवीय एक महान स्वतंत्रता सेनानी, राजनेता, शिक्षाविद्, समाज सुधारक और हिन्दी पत्रकारिता के अधिष्ठाता थे। उन्होंने सन् 1916 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना करने का सर्वाधिक : श्लाघनीय कार्य किया। उन्होंने दलितों के लिये मंदिर प्रवेश निषेध के खिलाफ देशभर में आन्दोलन चलाया। उन्हें मरणोपरान्त देश के सबसे बड़े सम्मान ''भारतरत्न'' से अलंकृत किया गया।

25 दिसम्बर को इलाहाबाद में जन्में पं. मदनमोहन भारतीय अपने महानतम् कार्यों के सम्पन्न करने के कारण ही ''महामना'' नाम से सुशोभित हुये। इनका परिवार मालवा का रहने वाला होने के कारण ये भी मालवीय कहलाये। शिक्षा समाप्त होने के बाद अध्यापक का कार्य, इसके अलावा पत्र इत्यादि के लिये लेख आदि लिखते। बाद में कानून का अध्ययन करने के उपरान्त इलाहाबाद हाईकोर्ट के प्रख्यात अधिवक्ता के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की। इसके अलावा लेखन आदि में रूचि होने के कारण सन् 1885 से 1907 तक समाचार पत्रों विशेषकर ''हिन्दुस्थान'' ''इंडियन यूनियन'' तथा अभ्युदय में सम्पादकीय कार्य करते रहे। वे एक सफल पत्रकार के रूप में सर्वत्र सराहना के पात्र बने रहे। अंततः पत्रकारिता ही उनका कार्यक्षेत्र बन गया। उन्होंने हिन्दी साहित्य की अभिव्यक्ति के लिये सन् 1910 में अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना की। महामना हिन्दी, हिन्दू और हिन्दुस्थान को सर्वोच्च स्थान प्रदान हो इन प्रयासों में आजीवन लगे रहे।

मलवीय जी ने असहयोग आन्दोलन के लिये अपने आपको पूरी तरह समर्पित कर दिया। सन् 1928 में उन्होंने लाला लाजपत राय और स्वतन्त्रता सेनानियों के साथ मिलकर साईमन कमीशन का विरोध किया। इसमें महिलाओं के लिये शिक्षा, विधवा विवाह का समर्थन तथा बाल विवाह का घोर विरोध किया। पूज्य मालवीय जी को सत्य, दया और न्याय पर आधारित सनातन धर्म सर्वाधिक प्रिय था। सही अर्थों में मालवीय जी के जीवन की सफलता मूलतः तीन तथ्यों से जुड़ी रहीं। इनमें चरित्रबल, विश्वास से अनुप्राणित कर्मयोग और वाणी वैभव शामिल था।

उन्होंने अपनी योग्यता के आधार पर ही वायसराय की कौंसिल, लेजिस्लेटिव कौंसिल और लेजिस्लटिव असेम्बली आदि के सदस्य बने। सन् 1913 में हरिद्वार के पास भीमपौड़ा में बाँध बनाने का काम शुरू किया। महामना ने इसके विरोध में आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया। तब शासन ने उन्हें आश्वासन दिया कि हिन्दुओं को अनुमति के बिना बाँध नहीं बाँधा जायेगा। ''महामना ने गौवध रोकने गायों की सेवा व रक्षा करने के लिये सन् 1941 में गौरक्षा मंडल की स्थापना की थी।''

ऐसे महान ज्योर्तिपुंज महामना पं. मदनमोहन मालवीय ने 13 नवम्बर को इस धरा से प्रस्थान किया। आपका मार्गदर्शन और कर्मशीलता से युवकों को प्रेरणा मिलती रहेगी।

❑❑❑

हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचन्द

- चन्द्रशेखर पचौरी

29 अगस्त 1905 में प्रयाग में जन्म, 1922 में सेना में भर्ती हुये और मेजर तिवारी ने प्रेरणा दी हॉकी खेलने चांदनी रात में अकेले अभ्यास करते जुनूनी ध्यानसिंह से ''ध्यान चन्द'' साथियों द्वारा नाम रखा गया। तीन ओलम्पिक गोल्ड भारत को जिताने वाले मेजर की महानता का परिचय भारत को 1936 में मिला, जब नंगे पैर हॉकी खेलते हुये जर्मनी की चालाकी का जवाब आठ शून्य से हराकर दिया और तानाशाह हिटलर लुभावने नौकरी का त्याग कर केवल भारत के लिये खेलना ही अपना सर्वषः समझा। 1928 में 14 गोल किये अर्म्सटडम, हॉकी तोड़कर देखी गयी जिसमें उन्हें "MAGICIAN" जादूगर ध्यान चन्द बना दिया। पद्म विभूषण जादूगर के नाम पर राष्ट्रीय खेल रत्न पुरूस्कार एवं स्टेडियम का नाम रखा गया। 3 गोल पहले, 35 गोल ओलम्पिक, 400 अंतर्राष्ट्रीय मैच में कुल 1000 गोल हॉकी खेल, सर डॉन ब्रेडमेन ने उन्हें उनके गोलों की तुलना क्रिकेट के रनों से की है। लोगों को ऐसी शंका थी कि उनकी हॉकी में गोल करने की चुम्बकीय शक्ति थी ।

उन्हें कुश्ती पसंद थी पर हॉकी आकर्षण पैदा कर गई। इस महानतम खिलाड़ी की जितनी प्रशंसा की जाए उतनी कम है। राष्ट्र उन्हें सदैव नमन करेगा।

❑❑❑

सफेद शक्कर (चीनी) जहर है

क्या आपको पता है आपके घर में प्रयोग की जाने वाली एक ऐसी वस्तु जिसके कारण 132 करोड़ की जनसंख्या वाले इस देश में लगभग हर घर में किसी न किसी को हार्टअटैक, कोलेस्ट्रॉल, हाई ब्लड प्रेशर, ब्रेन हैमरेज, डायबिटीस जैसे कई गंभीर रोगों का सामना करना पड़ता है और उसे हर घर में किसी न किसी रूप में प्रयोग किया जा रहा है। यहाँ तक कि बाजार में मिलने वाली हर मीठी खाने योग्य वस्तु बनाने में इसका प्रयोग होता ही है। उस वस्तु का नाम है चीनी यहपाँच सफेद जहरों (नमक, आलू, चावल, मैंदा और शक्कर) में से एक है। उससे आपके स्वास्थ पर कितना बुरा प्रभाव पड़ता है। भोजन में मिठास लाने के लिए हम जिस चीनी का प्रयोग करते हैं वह शरीर में जाने के बाद 103 रोगों का कारण बनती है।

चीनी एक जहर है जो मृत्यु के द्वार पर पहुंचाने के लिये अनेक रोगों का कारण है...जानिये कैसे....???

1. चीनी बनाने की प्रक्रिया में गंधक का सबसे अधिक प्रयोग होता है। गंधक माने पटाखों का मसाला होता है।
2. गंधक अत्यंत कठोर धातु है जो शरीर में चला तो जाता है परंतु बाहर नही निकलता।
3. चीनी कॉलेस्ट्रॉल बढ़ाती है जिसके कारण हृदयघात या हार्ट अटैक आता है।
4. चीनी शरीर के वजन को अनियंत्रित कर देती है जिसके कारण मोटापा होता है।
5. चीनी रक्तचाप या ब्लड प्रैशर को बढ़ाती है।
6. चीनी ब्रेन अटैक का एक प्रमुख कारण है।
7. चीनी की मिठास को आधुनिक चिकित्सा में सूक्रोज कहते हैं जिसे मनुष्य और जानवर दोनो पचा नहीं पाते।
8. चीनी बनाने की प्रक्रिया में तेइस हानिकारक रसायनों का प्रयोग किया जाता है।
9. चीनी डाइबिटीज का एक प्रमुख स्रोत है।
10. चीनी पेट की जलन का एक प्रमुख कारण है।
11. चीनी शरीर में ट्राइग्लिसराइड को बढ़ाती है।
12. चीनी पैरालिसिस अटैक या लकवा होने का एक प्रमुख कारण है।
13. चीनी बनाने की सबसे पहली मिल अंग्रेजो ने 1868 मैं लगाई थी। उसके पहले भारतवासी शुद्ध देशी गुड़ खाते थे और कभी बीमार नहीं पड़ते थे।
14. कृपया जितनी जल्दी हो सके, चीनी से गुड़ पे आएँ।

हम सबका उद्देश्य है कि इस देश में रोगों से मुक्त बनाना है चीनी का प्रयोग पूरी तरह बंद हो। जब लोग चीनी लेना ही बंद कर देंगे तो चीनी बनना भी बंद हो जाएगा।

❑❑❑

प्रेरक प्रसंग -

मातृभूमि का स्मरण

सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्री रास बिहारी बसु जापान में थे। वे प्रतिदिन अपना मस्तक दक्षिण-पश्चिम दिशा में रखकर सोते थे। उनके अन्तरंग साथियों को जब यह पता चला तो उन्होंने रास बिहारी को समझाने का प्रयास किया कि जापान में इस दिशा में सोना निषिद्ध है और ऐसा करने से अमंगल होता है।

बसु का उत्तर था-"प्रिय मित्रों, आप सब को यह ज्ञात है कि मैं अपनी मातृभूमि से दूर हूँ। मैं नही जानता कि मैं कभी वहाँ लौट सकूँगा अथवा नहीं। वह देखिए-सागर के उस पार इसी दक्षिण-पश्चिम दिशा में मेरी माँ अपने पुत्र को निहार रही है। मैं उसकी गोद में मस्तक रखने के लिए लालायित हूँ। दिन भर काम करने के पश्चात् रात्रि के समय मुझे ऐसा लगता है कि कोई अलौकिक आकृति समुद्र-पार मुझे अपनी ओर आने का संकेत कर रही है। मैं दौड़ कर उधर जाने का प्रयास करता हूँ। इस भ्रम में ही मैं सो जाता हूँ। भारत माँ को स्मरण करते, यदि मुझे दिशा-बोध नहीं होता तो मैं वह सब अनष्टि सहन करने को तैयार हूँ। आप मुझे मेरी माँ के प्यार तथा दुलार से वंचित न करें।"

मित्रों ने जब यह सुना तो श्री रास बिहारी बसु की देश-भक्ति पर मुग्ध हो उन्हें देखते रहे। इसके पश्चात् उन्होंने वह कथन फिर कभी नहीं दोहराया।

❑❑❑

दिसंबर माह में इन सब्जियों की खेती कर पाएं ज्यादा उपज

आजकल अधिकतर सब्जियों की खेती सालभर होने लगी है। आजकल बेमौसमी फसल उपजाने से उत्पादन में कमी तो आती ही है, साथ ही फसल की गुणवत्ता भी कम होती है, जिससे उसके बाजार में अच्छे भाव नहीं मिल पाते जबकि सही समय पर फसल लेने से बेहतर उत्पादन के साथ भरपूर कमाई भी होती हैं।

टमाटर -

दिसंबर माह में टमाटर की खेती की जा सकती है। इसके लिए इसकी उन्नत किस्मों का चयन किया जाना चाहिए। इसकी उन्नत किस्मों में अर्का विकास, सर्वोदय, सिलेक्शन-4, 5-18 स्मिथ, समय किंग, टमाटर 108, अंकुश, विकरंक, विपुलन, विशाल, अदिति, अजय, अमर, करीना, अजित, जयश्री, रीटा, बी.एस.एस. 103, 39 आदि प्रमुख रूप से शामिल हैं।

मूली -

मूली की फसल के लिए ठंडी जलवायु अच्छी रहती है. मूली का अच्छा उत्पादन लेने के लिए जीवांशयुक्त दोमट या बलुई दोमट मिट्टी अच्छी होती है। इसकी उन्नत किस्में जापानी सफेद, पूसा देशी, पूसा चेतकी, अर्का निशांत, जौनपुरी, बॉम्बे रेड, पूसा रेशमी, पंजाब अगेती, पंजाब सफेद, आई.एच. आर-1-1 एवं कल्याणपुर सफेद है. शीतोषण प्रदेशो के लिए रैपिड रेड, ह्वाइट टिप्स, स्कारलेट ग्लोब तथा पूसा हिमानी अच्छी किस्में हैं।

पालक -

पालक साग का ठंड में सबसे अधिक इस्तेमाल किया जाता है। वहीं, पालक को ठंडे मौसम की जरूरत होती है। ऐसे में पालक की बुवाई करते समय वातावरण का विशेष ध्यान रखना चाहिए। उपयुक्त वातावरण में पालक की बुवाई वर्ष भर की जा सकती है। पालक की उन्नत किस्मों में प्रमुख रूप से पंजाब ग्रीन व पंजाब सलेक्शन अधिक पैदावार देने वाली किस्में मानी जाती हैं। इसके अलावा पालक की अन्य उन्नत किस्मों में पूजा ज्योति, पूसा पालक, पूसा हरित, पूसा भारती आदि भी शामिल हैं।

बैंगन -

बैंगन की खेती के लिए जैविक पदार्थों से भरपूर दोमट एवं बलुआही दोमट मिट्टी बैंगन के लिए उपयुक्त होती है। बैंगन लगाने के लिए बीज को पौध-शाला में छोटी-छोटी क्यारियों में बोकर बिचड़ा तैयार करते हैं.जब ये बिचड़े चार-पांच सप्ताह के हो जाते हैं, तो उन्हें तैयार किए गए उर्वर खेतों में लगाते हैं. इसकी बुवाई के लिए प्रति हेक्टेयर 500-700 ग्राम बीज की आवश्यकता होती है। इसकी बुवाई करते समय लंबे लम्बे फलवाली किस्मों में कतार से कतार की दूरी 30 सेंटीमीटर व पौधे से पौधे की दूरी 45 सेंटीमीटर तथा गोल फलवाली किस्में कतार से कतार की दूरी 75 सेंटीमीटर व पौधे से पौधे के बीच 60 सेंटीमीटर की दूरी रखी जानी चाहिए।

गोभी -

ठण्ड में सब्जियों का राजा माना जाने वाली गोभी की खेती भी ठंड के मौसम में की जाती है। इसे हर तरह की भूमि पर उगाया जा सकता है पर अच्छे जल निकास वाली हल्की भूमि इसके लिए सबसे अच्छी हैं मिट्टी की पी एच 5.5-6.5 होनी चाहिए। यह अत्याधिक अम्लीय मिट्टी में वृद्धि नहीं कर सकती। इसकी उन्नत किस्मों में गोल्डन एकर, पूसा मुक्त, पूसा ड्रमहेड, के-वी, प्राइड ऑफ इंडिया, कोपन हगें, गंगा, पूसा सिंथेटिक, श्रीगणेश गोल, हरियाणा, कावेरी, बजरंग आदि हैं। इन किस्मों की औसतन पैदावार 75-80 क्विंटल प्रति एकड़ होती है। ❑❑❑

हर्षोल्लास के साथ मनायें तुलसी पूजन दिवस

आज जब पूरा विश्व क्रिसमस का त्यौहार मना रहा है तब भारत में 25 दिसंबर को तुलसी पूजन दिवस मनाया जा रहा है। सनातन काल से हिंदू धर्म में तुलसी जी की पूजा होती आ रही है और बहुत से लोग तुलसी जी को अपने घर में भी लगाते हैं। हिंदू धर्म में आस्था रखने वाले कई लोग हर दिन तुलसी जी के पौधे का पूजन करते हैं। तो फिर क्रिसमस के दिन ये तुलसी पूजन दिवस क्यों मनाया जाने लगा? ''25 दिसम्बर से 1 जनवरी के बीच शराब जैसे नशीले पदार्थों का सेवन करते है, इससे बलात्कार, हत्या, आत्महत्या जैसी घटनाओं से युवा वर्ग दुर्घटनाओं का शिकार होते हैं। इन्हीं दिनों आधुनिकता की आड़ में अवांछनीय कृत्य भी होते हैं, इसलिए जीव जगत के कल्याण हेतु 25 दिसंबर से एक जनवरी तक तुलसी- पूजन, गौ-पूजन, हवन, आदि का आयोजन किया जा रहा है। स्कंद पुराण में कहा गया है कि जिस घर में तुलसी का बगीचा होता है एवं पूजन होता है उसमें यमदूत प्रवेश नहीं करते। ''क्योंकि तुलसी जी का पौधा, पौधा नहीं जीवन का अंग है...

जो स्त्री तुलसी जी की पूजा करती है, उनका सौभाग्य अखण्ड रहता है। उनके घरसुख शांति व समृद्धि का वास रहता है घर का वातावरण सात्विक रहता है। तुलसी जी वृक्ष नहीं है! साक्षात् राधा जी का स्वरूप है। हिंदू धर्म में तुलसी के पौधे से कई आध्यात्मिक बातें जुड़ी हैं-शास्त्रीय मान्यता के अनुसार भगवान विष्णु को तुसली अत्यधिक प्रिय है। तुलसी के पत्तों के बिना भगवान विष्णु की पूजा अधूरी मानी जाती है। क्योंकि भगवान विष्णु का प्रसाद बिना तुलसी दल के पूर्ण नहीं होता है। मान्यता है कि जिस घर में प्रतिदिन तुलसी की पूजा होती है, वहां सुख-समृद्धि, सौभाग्य बना रहता है। कभी कोई कमी महसूस नहीं होती।

तुलसी के पत्ते पानी में डालकर स्नान करना तीर्थों में स्नान कर पवित्र होने जैसा है। मान्यता है कि जो भी व्यक्ति ऐसा करता है वह सभी यज्ञों में बैठने का अधिकारी होता है।

कार्तिक महीने में तुलसी जी और शालिग्राम का विवाह किया जाता है। कार्तिक माह में तुलसी की पूजा करने से सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

तुलसी की पत्तियां तोड़ने से पहले उसे प्रणाम करना चाहिए और इस मंत्र का उच्चारण करना चाहिए- महाप्रसाद जननी, सर्व सौभाग्यवर्धिनी, आधि व्याधि हरा नित्यं, तुलसी त्वं नमोस्तुते।

रविवार, चंद्रग्रहण और एकादशी के दिन तुलसी नहीं तोड़ना चाहिए।

''तुलसी वृक्ष न जानिये।
गाय न जानियेढोर।।
गुरू मनुज न जानिये।
ये तीनों नन्दकिशोर।।

अर्थात-तुलसी को कभी पेड़ न समझें गाय को पशु समझने की भूल न करें और गुरू को कोई साधारण मनुष्य समझने की भूल न करें, क्योंकि ये तीनों ही साक्षात् भगवान रूप हैं। जो औषधि और आध्यात्मिक महत्व तुलसी जी का है वह सांता क्लाज और क्रिसमस के पेड़ों में नहीं है। भारत संतों की भूमि है संता की नहीं। ❑❑❑

✣ वदतु संस्कृतम् ✣

संस्कृत	हिन्दी
1. किंमर्थम् श्रीमन?	- क्यों जी?
2. प्राप्तं खलु?	- मिला क्या?
3. किम् भवति इति पश्यामः।	- होगा क्या देखेंगे।
4. ज्ञातम्?	- समझ गये ?
5. कथम् आसीत?	- कैसा था/रहा?

डॉ. मनोज पाण्डेय
प्रांत संगठन मंत्री (संस्कृत भारती)

महिला किसान के कठोर परिश्रम का परिणाम

नाराणगंज के ग्राम जेवरा की किसान द्रौपदी ने जैविक खेती को बारीकी से समझ कर राई की फसल तैयार की है जो खेतों में लहलहा रही है। द्रौपदी ने बायो इरिसोर्स सेंटर का प्रशिक्षण लेने के पश्चात जैविक खेती की जानकारी ली। इसके पश्चात जैविक खेती को अपनाया। राई की फसल में अपनाई उन्नत तकनीक जिससे उत्पादन में वृद्धि हुई तथा व्यय में कमी आई। आजीविका मिशन के समूहों में जुड़ी महिलाएँ देसी बीज को उपचार करके कारगार उन्नत खेती

की ओर अग्रसर हैं। द्रौपदी ने राई की फसल में प्रोसेस्ड गोबर खाद का प्रयोग किया है और आज इनकी फसल पहले से अधिक उन्नत है। संस्था के अनुरुद्ध शास्त्री ने बताया कि किसी भी फसल में देशी बीजों को जैविक उपचार करने के बाद बोने पर पहले से अच्छे परिणाम देखने को मिलते हैं। जैविक कीटनाशक का प्रयोग करने से फसल सुरक्षा में अलग से रासायनिक दवाइयों का व्यय नहीं रहता। जब किसान रासायनिक से जैविक खेती की ओर आता है तो मिट्टी से हानिकारक जहरीले रसायनों को हटाने में लगभग तीन वर्ष लगते हैं, जो कन्वर्जन पीरियड कहलाता है। ऐसे में कई उद्यमी, शासकीय और गैर शासकीय संगठन सहयोग करते हैं।

❑❑❑

अमृत वचन

राष्ट्रवाद तभी औचित्य गृहण कर सकता है, जब लोगों के बीच जाति, नस्ल या रंग का अन्तर भुलाकर उनमें सामाजिक भ्रातृत्व को सर्वोच्च स्थान दिया जाये।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर

देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद (जयन्ती विशेष)

देश के प्रथम राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद का जन्म 3 दिसंबर, 1884 को बिहार के सीवान जिला के जीरादेई गाँव में हुआ था। 26 जनवरी 1950 को डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को पहली बार संवैधानिक रूप से राष्ट्रपति बनने का अवसर मिला। यह वह दिन था जब उन्हें 21 तोपों की सलामी दी गई। वह भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के मुख्य नेताओं में से एक थे। सम्पूर्ण भारत में डॉ राजेंद्र प्रसाद काफी लोकप्रिय थे जिसके बाद से उन्हें राजेंद्र बाबू एवं देश रत्न कहकर बुलाया जाता था। राजेंद्र प्रसाद की प्रारंभिक शिक्षा बिहार के छपरा जिला स्कूल से हुई थीं। केवल 18 वर्ष की उम्र में उन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय की प्रवेश परीक्षा प्रथम स्थान से पास की और फिर कोलकाता के प्रसिद्ध प्रेसीडेंसी कॉलेज में दाखिला लेकर लॉ के क्षेत्र में डॉक्टरेट की उपाधि हासिल की। वे हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू, बंगाली एवं फारसी भाषा से पूरी तरह परिचित थे। 1962 में जब उन्होंने राष्ट्रपति के पद से अवकाश लिया तो भारत सरकार ने उन्हें ''भारत रत्न'' की उपाधि से सम्मानित किया था. 28 फरवरी 1963 को उनका निधन हो गया। उनके चेहरे पर हमेशा मुस्कान बनी रहती थी, जो हर किसी को मोहित कर लेती थी। डॉ. प्रसाद भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के एक से अधिक बार अध्यक्ष रहे।

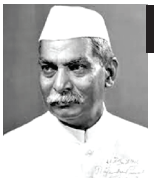

❑❑❑

SURYA

भारत के साथ
– प्रगति के पथ पर –
अग्रसर

हमारे अनेक अत्याधुनिक उत्पादों के संग पूरा भारत एक है। हर भारतीय घर रोशनी से जगमग है। देश बदलने वालों के लिए हम नई रोशनी है। नए - नए कीर्तिमान कर रहे हैं। व्यवसाय जगत में दुनिया की रुझान समझते हैं। चुनौतियों को भांप लेते हैं और फिर खुद को तेजी से बदल लेते हैं। काम करने का तरीका बेहतर बना रहे हैं और अच्छे परिणाम दे रहे हैं। भारत की तरह, जो लगातार तरक्की कर रहा है, नई ऊंचाई को छू रहा है, सूर्या ने भी पिछले 5 दशकों में सफलता की जो कहानी लिखी है वह अविश्वसनीय है

सन् 1973 में शुरुआत कर सूर्या ने एक लंबा और स्वर्णिम सफर तय किया है।

I am SURYA | CELEBRATING 50 YEARS OF TRUST | DURABLE PRODUCTS FOR ALL SEGMENTS | ASSURED QUALITY

CONSUMER LIGHTING

PROFESSIONAL LIGHTING

APPLIANCES

FANS

PVC PIPES

STEEL PIPES

SURYA ROSHNI LIMITED
E-mail: consumercare@surya.in | www.surya.co.in | Tel.: +91-1147108000

Toll Free No.: 1800 102 5657
/suryalighting | /surya_roshni

जबलपुर में आतंकी गतिविधि

राष्ट्रीय जाँच एजेंसी (एनआईए) ने आईएसआईएस जबलपुर मॉड्यूल के गिरफ्तार चार सदस्यों के खिलाफ एनआईए की स्पेशल कोर्ट में मंगलवार को आरोप पत्र दायर किए गए। एनआईए के प्रवक्ता ने जानकारी देते हुए बताया कि इस्लामिक स्टेट ऑफ इराक एंड सीरिया (आईएसआईएस) के जबलपुर मॉड्यूल भोले भाले मुस्लिम युवाओं को कट्टरपंथी बनाने का षड़यंत्र रच रहा था। यह षड़यंत्र मॉड्यूल के जमीनी स्तर पर ''दावा'' कार्यक्रमों और विभिन्न सोशल मडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से की जा रही थी। उन्होंने बताया कि एनआईए ने भारतीय दंड संहिता और गैरकानूनी गतिविधियाँ (रोकथाम) अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज करने के बाद मई में तीन आरोपियों सैयद मामूर अली, मोहम्मद आदिल खान और मोहम्मद शाहिद को गिरतार किया था। इसके अलावा चौथे आरोपी कासिफ खान को एनआईए ने अगस्त में गिरतार किया था।

उन्होंने बताया कि अब तक की जाँच से पता चला है कि आरोपी प्रतिबंधित आतंकी संगठन की विचारधारा से प्रेरित थे और प्रमुख नेताओं सहित लोकतांत्रिक संस्थानों और व्यक्तियों को निशाना बनाने के लिए सक्रिय रूप से काम कर रहे थे। मॉड्यूल स्थानीय धार्मिक स्थानों और घरों में बैठकें आयोजित कर रहा था और आईएसआईएस नेतृत्व के इशारे पर हिंसक हमले करके देश में आतंक फैलाने की योजना बना रहा था। ❑❑❑

इस कुप्रथा पर हो प्रतिबंध

जनजाति क्षेत्र के 53 दिन के अबोध बालक प्रदीप को बीमार पड़ने पर शरीर को गरम सलाखों से दागने की कुप्रथा पर प्रशासन ने चोट करते दागे जाने के मामले में तीन लोगों पर एफआईआर की है। यह बात अलग है कि प्रशासन के संज्ञान में यह मामला आने के 16 वें दिन एफआईआर हुई, वह भी मेडिकल कॉलेज की सूचना पर। मंगलवार को सोहागपुर पुलिस ने बच्चे की माँ बेलवती, दादा राजानी बैगा तथा दाई बूटी बाई बैगा के विरुद्ध अपराध पंजीबद्ध किया। इन तीनों के विरूद्ध आईपीसी व ड्रग एवं मैजिक रेमेडीज एक्ट के अन्तर्गत अपराध पंजीबद्ध हुआ है।

जिला मुख्यालय से 15 किलोमीटर दूर स्थित ग्राम हरदी-77 में रहने वाले प्रेमलाल बैगा के 53 दिन के बच्चे प्रदीप बैगा को बीमार पडने पर पास में रहने वाली दाई द्वारा शरीर के 41 स्थानों पर दागा गया था। इधर 8 नवंबर से मेडिकल कॉलेज में बच्चे प्रदीप की स्थिति में सुधार हो रहा है। एसएनसीयू के प्रभारी डॉ. निशांत प्रभाकर ने बताया कि प्रदीप का इलाज चल रहा है और वह खतरे से बाहर है। समिति के मामले की जांच के लिए सीएमएचओ डॉ. आरएस पाण्डे द्वारा गठित अपनी रिपोर्ट नहीं सौंपी। सीएमएचओ ने सिंहपुर बीएमओ डॉ. सुनील स्थापक व आरबीएचके कॉर्डिनेटर कंचन पटेल को इस मामले की जांच कर, दो दिन में रिपोर्ट देने कहा था। जांच टीम को इस बात का पता लगाना था कि स्वास्थ्य विभाग का मैदानी अमला एमपीडब्ल्यू, एएनएम और आशा कार्यकर्ता ने कहां लापरवाही बरती।

❑❑❑

उमरिया के धूपखड़ा और बालाघाट के सोनेवानी में बना शत-प्रतिशत मतदान का रिकॉर्ड

उमरिया जिले के मानपुर विधानसभा के धूपखड़ा पोलिंग बूथ में शत-प्रतिशत मतदान हुआ। जहां 708 मतदाता थे और सभी 708 मतदाताओं ने 17 नवम्बर को हुए विधानसभा निर्वाचन में हिस्सा लिया। प्रशासन ने इन मतदाताओं को सम्मानित किया है। शत-प्रतिशत मतदान की उपलब्धि के बाद जिला प्रशासन एवं स्वीप टीम धूपखड़ा गांव में महोत्सव का आयोजन किया और मतदाताओं का आभार प्रदर्शन किया है। इस दौरान युवा, वृद्ध एवं महिला मतदाताओं को सम्मानित किया गया। आयोजन में समस्त मतदाता शामिल हुए। इस दौरान जिला निर्वाचन अधिकारी बुद्धेश वैद्य, सीईओ जिला पंचायत एवं स्वीप प्रभारी इला तिवारी सहित जिला प्रशासन की टीम उपस्थिति रही।

बालाघाट के सोनेवानी बूथ में शत प्रतिशत मतदान :

मध्यप्रदेश के सबसे कम मतदाता वाले बूथ सोनेवानी में सिर्फ 42 मतदाता हैं। यहाँ जनजातीय समाज के लोग घरों से निकलकर भयमुक्त होकर मतदान करते रहे। नक्सल प्रभावित इलाकों में लोग बिना किसी भय के मतदान केंद्र पहुंचे। यहाँ सभी मतदाताओं ने मतदान कर शत-प्रतिशत मतदान किया। बालाघाट जिले के तीन नक्सल प्रभावित विधानसभा बैहर, परसवाड़ा और लांजी में 900 से ज्यादा मतदान केंद्र थे। इसके साथ ही यहाँ इस बार 34 नए मतदान केंद्र बनाए गए।

❑❑❑

सीधी के गौ सेवक

सीधी के कुछ जुझारू गौ सेवक अत्यंत सराहनीय कार्य कर रहे हैं। समाज मे विचरण कर रहे निरीह मूक गौ वंश की सेवा में सतत, तत्पर रहते हैं। जो पशु पालक दुधारू गायों घर से निकाल देते हैं ये मूक प्राणी भूख प्यास से भटकते हुए मुख्य मार्ग पर आ जाते हैं और दुर्घटना के षिकार होते हैं। कई गायों की भारी वाहनों से टकराकर मृत्यु हो जाती है। ये गौ सेवक सेवा में तत्पर रहते हुऐ सूचना मिलते ही आधे घंटे के अंदर निश्चित स्थान पर पहुंच जाते हैं और गौ वंश की रक्षा करते हैं। समाज के सहयोग से प्रशासन को साथ लेकर सेवा में जुट जाते है। ❑❑❑

महत्त्वपूर्ण दिवस माह दिसम्बर

01 दिसम्बर–सीमा सुरक्षा बल दिवस
02 दिसम्बर–राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण दिवस
03 दिसम्बर–खुदीराम बोस जयंती
03 दिसम्बर–डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जयंती
03 दिसम्बर–मेजर ध्यानचंद पुण्यतिथि
03 दिसम्बर–भोपाल गैस त्रासदी
04 दिसम्बर–स्वामी ब्रह्मानंद जयंती
04 दिसम्बर–टंट्या भील पुण्यतिथि
04 दिसम्बर–भारतीय नौसेना दिवस
04 दिसम्बर–विश्व वन्य जीव संरक्षण दिवस
05 दिसम्बर–योगी अरविंद घोष पुण्यतिथि
06 दिसम्बर–डॉ. भीमराव अम्बेडकर पुण्यतिथि
07 दिसम्बर–जितेन्द्रनाथ मुखर्जी जयंती
07 दिसम्बर–सशस्त्र सेना झंडा दिवस
07 दिसम्बर–श्री प्रमुख स्वामी महाराज जयंती
08 दिसम्बर–जनरल विपिन सिंह रावत पुण्यतिथि
09 दिसम्बर–महाकवि सूरदास जयंती
10 दिसम्बर–मानवाधिकार दिवस
10 दिसम्बर–शहीद वीरनारायण सिंह पुण्यतिथि
10 दिसम्बर–चक्रवर्ती राजगोपालाचारी जयंती
11 दिसम्बर–सुब्रह्मण्य जयंती
12 दिसम्बर–मैथिलीशरण पुण्यतिथि
15 दिसम्बर–सरदार वल्लभ भाई पटेल पुण्यतिथि
17 दिसम्बर–राजेन्द्र नाथ लहाड़ी पुण्यतिथि
17 दिसम्बर–गुरू घासीराम जयंती
19 दिसम्बर–रामप्रसाद बिस्मिल पुण्यतिथि
19 दिसम्बर–ठाकुर रोशन सिंह पुण्यतिथि
20 दिसम्बर–संत गाडगे बाबा पुण्यतिथि
22 दिसम्बर–श्री निवास रामानुजम जयंती
24 दिसम्बर–राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस
25 दिसम्बर–पं. मदनमोहन मालवीय जयंती
25 दिसम्बर–चक्रवर्ती राजगोपालाचारी पुण्यतिथि
25 दिसम्बर–तुलसी पूजन दिवस
26 दिसम्बर–दत्तात्रेय जयंती

❑❑❑

सतना के मझगवां में 4 दिन बाद मिली स्कूल से लापता नाबालिग: कन्वर्जन और अपहरण के आरोप मुकदमा दर्ज

सतना जिले के मझगवां में विगत दिनों से लापता 15 साल की नाबालिग लड़की 27 नवम्बर सोमवार रात को मिल गई। इस लड़की का अपहरण और रेप समेत। कन्वर्जन (धर्म परिवर्तन) कराने का आरोप इरशाद खान पर है। पुलिस ने मंगलवार को इरशाद, उसके नाबालिग साथी और 3 महिलाओं के खिलाफ FIR दर्ज कर ली है। इनमें से 4 को जेल भेज दिया गया है जबकि नाबालिग आरोपी को न्यायिक अभिरक्षा में रखा गया है। आरोपियों पर कड़ी कार्रवाई के लिए वहां हिंदुत्ववादी संगठनों ने थाने के सामने प्रदर्शन भी किया था। नाबालिग लड़की के हिजाब में कलमा पढ़ते हुए फोटो सोशल मीडिया पर वायरल होने लगे थे। सोशल मीडिया पर पोस्ट में दावा किया गया कि लड़की का नाम बदलकर अल्फिया खान रख दिया गया था। उसके परिजन और हिंदुत्ववादी संगठनों ने पुलिस पर मामले में लापरवाही बरतने का आरोप लगाया है।

स्कूल से लापता हो गई थी नाबालिग

15 साल की लड़की 23 नवंबर को स्कूल में प्रार्थना के बाद लापता हो गई थी। परिजन ने तलाश किया तो पता चला कि एक नाबालिग उसे बाइक पर बैठाकर ले गया है। पूछताछ में जानकारी मिली कि वह इम्तियाज खान उर्फ बम्बइया कबाड़ी के यहाँ नौकरी करता है। इसके बाद परिजन थाने पहुँचे और मामले की जानकारी दी। शिकायत पर लड़की को ढूढ़ना प्रारंभ किया। परिजन का आरोप है कि पुलिस केस दर्ज करने में टालमटोल करती रही। थाने का स्टाफ बार-बार यही कहता रहा कि बम्बइया कबाड़ी के नाबालिग नौकर से पूछताछ की जा चुकी है, उसका मामले से कोई कनेक्शन नहीं मिला है। पुलिस की कार्रवाई से असंतुष्ट माता-पिता एसपी कार्यालय पहुँचे, लेकिन उनसे भेंट नहीं हो सकी।

राजनीतिक हस्तक्षेप के बाद मिली लड़की

इसके बाद परिजन स्थानीय नेता सुभाष शर्मा डोली के पास पहुंचे। परिजनों के कहने पर शर्मा ने एडिशनल एसपी

विक्रम सिंह कुशवाह से बात की। विहिप और बजरंग दल के कार्यकर्ता भी एक्टिव हुए। जिसके बाद लापता लड़की मझगवां के ही गोडान टोला के एक मकान में मिल गई। वह मकान हमीदा निशा का है। लड़की के मिलने की खबर पाते ही हिंदुत्ववादी दलों के नेता थाने पहुँचे। यहाँ बजरंग दल के नेता सचिन शुक्ला ने आरोप लगाया कि इरशाद ने अपने पिता-भाई, दोस्त और अन्य परिजन की मदद से लड़की को किडनैप किया। उसका धर्म परिवर्तन कराने के बाद दुष्कर्म किया। शुक्ला ने कहा कि इरशाद पिछले 4 महीने से लड़की को परेशान कर रहा था। कुछ दिनों पहले उसे पकड़ा भी गया था। तब मामला दर्ज होने के बाद भी उसने हरकतें बंद नहीं की थीं। इसके बाद पुलिस ने इरशाद खान पिता इम्तियाज खान उर्फ बम्बइया कबाड़ी, उसके नाबालिग साथी, हमीदा निशा, नूरजहां और आशिया खान के खिलाफ आईपीसी की धारा 363, 366, 368, 376, 120 बी, 5/6 पॉक्सो एक्ट तथा 3/5 मप्र धार्मिक स्वातंत्र्य अधिनियम के तहत FIR दर्ज कर ली।

❑❑❑

शाश्वत हिन्दू गर्जना
में न्यूनतम दर पर विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें -
भूपेन्द्र पवार -7898946667

‘ तेजस’ के तेज से उन्नत हुई वायुसेना

प्रधानमंत्री मोदी जी ने कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु में तेजस लड़ाकू विमान में उड़ान भरी। प्रधानमंत्री मोदी जी की तेजस विमान में कुल 45 मिनट की सॉर्टी रही अर्थात् है मोदी जी ने हल्के लड़ाकू विमान तेजस में 45 मिनट की उड़ान भरी और उड़ान भरते समय कुछ देर के लिए तेजस के संपूर्ण नियंत्रणों को स्वयं अपने द्वारा संचालित किया। मोदी जी ने तेजस लड़ाकू विमान में उड़ान भरने के पश्चात् कहा कि उन्होंने सफलतापूर्वक तेजस की उड़ान भरी और उन्हें इसके लिए गर्व है। उन्होंने बेंगलुरु स्थित एचएएल यानी हिंदुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड फैसिलिटी का निरीक्षण भी किया।

भारतीय वायुसेना, DRDO और HAL के साथ ही समस्त भारतवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ।’ यह अनुभव अविश्वसनीय रूप से समृद्ध था, जिसने हमारे देश की स्वदेशी क्षमताओं में सभी के विश्वास को बढ़ा दिया और हमारी राष्ट्रीय सैनिक क्षमता को प्रमाणित किया है।

तेजस हिन्दुस्तान एरोनाटिक्स लिमिटेड द्वारा विकसित एक सीट और एक जेट इंजन वाला भारत में विकसित किया

गया एक हल्का जेट लड़ाकू विमान है। जो बिना पूंछ का, कम्पाउण्ड - डेल्टा पंख वाला विमान है।

यह देश के लिए एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। इस उड़ान से एक ओर देश के सैनिकों और इस क्षेत्र में लगे हुए अभियंताओं वैज्ञानिकों का मनोबल बढ़ेगा तथा दूसरी ओर विश्व के अन्य देशों को इस लड़ाकू विमान की विश्वसनीयता को लेकर जो प्रश्न चिन्ह है वह समाप्त हो जाएंगे। विश्व के बाजार में इस लड़ाकू विमान की माँग भी बढ़ेगी। ❑❑❑

शहडोल के कुलदीप ने साइकिल चलाकर बनाया रिकॉर्ड

उत्तर से दक्षिण और पश्चिम से पूर्व तक अधिकतम दूरी तक साइकिल चलाने का कीर्तिमान शहडोल जिले के ब्यौहारी तहसील के कल्लेह के कुलदीप कुमार पटेल ने बनाया है। इस कार्य के लिए इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड ने उन्हें प्रमाण पत्र भी प्रदान किया। उन्होंने 2 चरणों में साइकिल चलाई थी जिसमें पहले चरण में 23 जुलाई को सुबह 9.17 बजे श्रीनगर (जम्मू और कश्मीर) से यात्रा प्रारंभ की। 17 अगस्त को सुबह 6.35 बजे कन्याकुमारी में इसे पूरा किया। दूसरे चरण में 20 अगस्त को सुबह 5.58 बजे पोरबंदर (गुजरात) से यात्रा प्रारंभ की गयी और 7 सितंबर को शाम 5. 47 बजे सिलचर (असम) में पूरा किया गया। उन्होंने 45 दिन, 23 घंटे और 33 मिनट में 7,497.1 किमी साइकिल चलाई। उनकी इस उपलब्धि के पश्चात् विधानसभा चुनाव में भारत निर्वाचन आयोग द्वारा कुलदीप पटेल को जिले का यूथ स्वीप आइकॉन भी बनाया गया था। ❑❑❑

जीतें पुरस्कार बाल मित्रों नवम्बर का अंक पढ़ने के पश्चात निम्न लिखित प्रश्नों के उत्तर अपने उत्तर सीट में भरकर **9522525363** पर वॉट्सएप करें। प्रथम 10 बाल मित्रों के नाम शाश्वत हिन्दू गर्जना में प्रकाशित किये जाएगें तथा प्रथम 5 विजेताओं की फोटो प्रकाशित कर उन्हें पुरूस्कृत भी किया जायेगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल किशोर ही भाग ले सकते है । **उत्तर भेजने की अंतिम तिथि 25 दिसम्बर 2023**

प्र.1 टंट्या मामा को फांसी कब दी गई?
(1) 4 दिसम्बर 1889 (2) 26, जनवरी 1842
(3) 10, नवम्बर 1888 (4) 06 दिसम्बर 1878

प्र.2 डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का जन्म किस जिले में हुआ?
(1) जिला सिवनी (2) जिला सिवान (3) जिला पटना (4) जिला सीतामढ़ी

प्र.3 पं. मदनमोहन मालवीय जी ने अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना किस सन् में की थी?
(1) 1916 (2) 1910 (3) 1941 (4) 1907

प्र.4 गौरक्षा मण्डल की स्थापना कब की गई थी?
(1) 1913 (2) 1964 (3) 1957 (4) 1941

प्र.5 सीमा सुरक्षा बल का गठन कब हुआ था?
(1) 15, दिसम्बर 1965 (2) 4,दिसम्बर 1965
(3) 15 दिसम्बर 1965 (4) 1,दिसम्बर 1965

प्र.6 दिल्ली स्टेडियम का नाम किस खिलाड़ी के नाम पर हैं?
(1) सचिन (2) मेजर ध्यान चन्द (3) विराट कोहरी (4) विशन सिंह बेदी

प्र.7 अयोध्या में कितने किलो की स्वर्णजड़ित रामचरित मानस स्थापित होगी?
(1) 141 किलो (2) 151 किलो (3) 121 किलो (4) 111 किलो

प्र.8 लाला हरदौल पर बनी फिल्म के निर्माता कौन हैं?
(1) श्रीमती रश्मि जेता (2) डॉ. प्रो. रश्मि जेता
(3) डॉ. स्मिता जेता (4) श्रीमती नेहा जेता

प्र.9 भारतीय नौसेना का ध्वज में नया परिवर्तन कब किया गया?
(1) 4,दिसम्बर 2020 (2) 4, दिसम्बर 2022
(3) 2, सितम्बर 2023 (4) 2, सितम्बर 2022

प्र.10 तुलसी के पत्तों के बिना किस भगवान की पूजा अधूरी मानी जाती हैं?
(1) भगवान शिव जी (2) भगवान विष्णु जी (3) भगवान गणेश जी (4) भगवान ब्रह्मा जी

निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वॉट्सएप करें।
(बाल प्रश्नोत्तरी-8)
(कृपया अपनी पासपोर्ट साईज की फोटो भी व्हाट्सएप करें)

1.( ) 2.( ) 3.( )
4.( ) 5.( ) 6.( )
7.( ) 8.( ) 9.( )
10.( )

नाम.....
पिता का नाम .....
उम्र ..... पूर्ण पता .....
.....
पिन ..... जिला.....
मोबाईल नं.....

बाल प्रश्नोत्तरी- 7 के परिणाम

धीर शर्मा

आदित्य मिश्रा

मयंक नामदेव

नूतन कु. गौठरिया

देव साहू

1. **वीर शर्मा,** गोटेगाँव, नरसिंहपुर
2. **आदित्य मिश्रा,** मिसिरगवां, मऊगंज
3. **मयंक नामदेव,** पृथ्वीपुर, निवाड़ी
4. **नूतन कु. गौठरिया,** नारायणगंज, मंडला
5. **देव साहू,** शहपुरा, डिण्डौरी
6. **तनिश पटेल,** पन्ना
7. **इश्का सूर्यवंशी,** छिंदवाड़ा
8. **शिवा श्रीपाल,** जबलपुर
9. **अन्वेषा रघुवंशी,** सागर
10. **धर्मवीर द्विवेदी,** छतरपुर

प्रथम 5 विजेताओं को पुरुस्कार भेजे जा रहे हैं:-
सही उत्तर:- 1 (2), 2 (2), 3 (1), 4 (4), 5 (4), 6 (2), 7 (1), 8 (4)

सुभाषित

राष्ट्रं राष्ट्रतां याति यद्यसंघटिता जनाः।
निदानं राष्ट्र-भावस्यसुसंघटित जीवनम्॥

॥ भावार्थ ॥

जिस राष्ट्र में लोग संगठित नहीं हैं, वह राष्ट्र राष्ट्रत्व को प्राप्त नहीं होता। सुसंगठित जीवन ही राष्ट्रभाव का मूल कारण है।

भारतीय नौसेना के नए ध्वज पर छत्रपति शिवाजी की शाही मुहर

इस वर्ष देश के कोने-कोने में छत्रपति शिवाजी महाराज के द्वारा स्थापित हिंदवी स्वराज्य की स्थापना का 350वां वर्ष हर्षोल्लास के साथ मना रहा है। 4 दिसंबर को भारतीय नौसेना दिवस है। इस अवसर पर नौसेना के नये ध्वज के संबंध में कुछ बातें जानते हैं। 2 सितंबर 2022 को भारतीय नौसेना के ध्वज में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ जो शिवाजी महाराज को समर्पित किया गया। इस दिन भारतीय नौसेना को आईएनएस विक्रांत के साथ-साथ नया ध्वज भी मिला। आईएनएस विक्रांत के अनावरण के कार्यक्रम में नौसेना के नए ध्वज को भी सार्वजनिक किया गया। भारतीय नौसेना के औपनिवेशिक अतीत को समाप्त करने के सफल प्रयास के अंतर्गत इस ध्वज में परिवर्तन किया गया।

इस कार्यक्रम में छत्रपति शिवाजी महाराज को स्मरण करते हुए **प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा, "छत्रपति वीर शिवाजी महाराज" ने इस समुद्री सामर्थ्य के दम पर ऐसी नौसेना का निर्माण किया, जिसने दुश्मनों की नींद उड़ाकर रखती थी।** जब अंग्रेज भारत आए, तो वो भारतीय जहाजों और उनके माध्यम से होने वाले व्यापार की शक्ति से भयभीत रहते थे। उन्होंने कहा, "अब तक भारतीय नौसेना के ध्वज पर बने परतंत्रता की पहचान बनी हुई थी। लेकिन अब आज से छत्रपति शिवाजी से प्रेरित नौसेना का नया ध्वज समुद्र और आकाश में लहराएगा।"

नए ध्वज से लाल रंग के सेंट जॉर्ज क्रॉस को हटा दिया गया है। अब ऊपर बाईं ओर तिरंगा बना है। झंडे का आधार सफेद रंग का ही रखा गया है जो नौसेना के अतिरिक्त पूरे भारत को सांकेतिक रूप से सम्मिलित करता है। ध्वज के दाहिनी ओर नीले रंग के पृष्ठभूमि वाले एक अष्टकोण में सुनहरे रंग का अशोक चिह्न बना है। अष्टकोण की परिधि पर सुनहरे रंग के दो किनारे भी बनी हैं। इसके नीचे "सत्यमेव जयते" लिखा हुआ है और एक एंकर बना हुआ है जो छत्रपति शिवाजी महाराज की शाही मुहर को दर्शाता है।

इन सबके नीचे संस्कृत में **"शं नो वरुण:"** अर्थात् "जल के देवता वरुण हमारे लिए शुभ हों।" इसका अष्टकोण आठ दिशाओं का संकेत देते हैं जो भारतीय नेवी की वैश्विक पहुँच को बताता है।

❑❑❑

गोपाष्टमी पर्व का आयोजन

विश्व हिंदू परिषद तथा बजरंग दल रानी दुर्गावती जिला द्वारा हनुमान प्रखंड माँ बड़ी खेरमाई मंदिर भानतलैया परिसर में गौमाता का पूजन अर्चन कर महाआरती की गई। महाकौशल प्रान्त गौ रक्षा प्रमुख सत्येंद्र सिंह ने कहा कि सनातन वैदिक हिंदू संस्कृति में गौमाता की पूजन का विशेष महत्व होता है। यह कार्तिक मास की अष्टमी तिथि को गोपाष्टमी के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि भगवान रामजी ने भी इसीलिए जन्म लिया कि पृथ्वी पर विप्र, गाय, संतों की रक्षा की जा सके। प्रान्त गौ रक्षा समिति के सभी सदस्यों ने इस अवसर पर गौ रक्षा के संबंध में सामूहिक शपथ ली। इस कार्यक्रम में प्रदीप गुप्ता, संजय गुप्ता, राजेश रैकवार, उमेश राठौर, अमित जाट, पंकज श्रीवात्री, आशीष मिश्रा, दिलीप बर्मन, लकी तिवारी, मोहन प्रजापति आदि इस पूजन कार्यक्रम में उपस्थित थे।

❑❑❑

रामोविग्रहवान धर्म : रामलला प्राण-प्रतिष्ठा समारोह का आमंत्रण - रमेश शर्मा

अयोध्या में भगवान राम का राज्याभिषेक साधारण नहीं था। उसमें पूरे भारत के सभी क्षेत्रों और समाजों की सहभागिता थी। अब वही स्वरूप रामजन्मभूमि पर रामलला प्राण-प्रतिष्ठा में भी देखने को मिलेगा। इसके लिये भारत के सभी पाँच लाख गाँवों को पीले चावल के साथ आमंत्रण भेजा गया है जिसका वितरण भी आरंभ हो गया है। रामजन्मभूमि में निर्मित हो रहे भव्य मंदिर में रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा समारोह भी त्रेता में भगवान राम के राज्याभिषेक की भाँति भव्य और असाधारण होगा। स्मरण रहे कि यह पावन अवसर पाँच सौ वर्षों के लंबे संघर्ष और लाखों प्राणों के बलिदान के फलस्वरूप आया है।

वनवास काल के बाद अयोध्या लौटे भगवान राम का राज्याभिषेक एक शासक का सिंहासनारुढ़ होने अथवा लंका पर विजय का उत्सव आयोजन भर नहीं था। वह पूरे भारत राष्ट्र के सांस्कृतिक, सामाजिक क्षेत्रीय एकत्व का स्वरूप था। इसकी तैयारी दोनों प्रकार से की गई थी। अयोध्या में रामजी के स्वागत के लिये भरतजी ने सभी समाजों, संतों और शासन प्रतिनिधियों को एकत्र किया था तो श्रीलंका से लौटते समय रामजी भी विभिन्न समाज, शासक और ऋषियों संतों को आग्रह पूर्वक अपने साथ लाये थे। वस्तुतः रामजी का अवतार सामाजिक संगठन, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिये हुआ था।

रामजी का राज्याभिषेक समारोह पूरे भारत के राष्ट्रीय स्वरूप का स्वरूप प्रतिबिंब था। राष्ट्र के इसी सांस्कृतिक, सामाजिक क्षेत्रीय स्वरूप के दर्शन 22 जनवरी को अयोध्या में होने जा रहे, जिसमें रामलला के दर्शन जन्म भूमि स्थल पर बने मंदिर में रामलला के प्राण-प्रतिष्ठा समारोह में होंगे। इसके लिये अयोध्या से भारत के सभी पाँच लाख गाँवों के लिये आमंत्रण और पीले चावल भेजे गये हैं। भारत के विभिन्न प्रांतों और उपप्राँतों का अपना सामाजिक जीवन है। बोली और शैली में भी कुछ अंतर है। अयोध्या से विधिवत पूजन के बाद जो आमंत्रण पत्र और अन्य सामग्री विभिन्न प्रांतों में भेजी गई है वह उनकी स्थानीय भाषा और परंपरानुरूप है ।

श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास ने आमंत्रण और अक्षत के साथ जो पत्रक तैयार किया है उसमें रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा के दिन अपने नगर, मुहल्ले और गाँव के प्रमुख मंदिर में दीप जलाकर उत्सव मनाने का आग्रह किया गया है। न्यास द्वारा पत्रक और आमंत्रण भेजने के इस कार्य में विश्व हिन्दू परिषद सहित अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक और स्वयंसेवी संगठन सक्रिय हो गये हैं। विशेषकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता आमंत्रण पत्र वितरण का समन्वय कर रहे हैं। ज्ञातव्य है कि श्रीराम जन्मभूमि के लिये चले निर्णायक आंदोलन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका केन्द्रीभूत चेतना के रूप रही है। उसी प्रकार संघ के कार्यकर्ता रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा आयोजन की तैयारी में सक्रिय हैं। प्रयास है कि 22 जनवरी को अयोध्या में जन्मभूमि मंदिर में रामलला प्राण-प्रतिष्ठा आयोजन के साथ देशभर के सभी पाँच लाख गाँवों में उत्सव आयोजन हो और प्रमुख मंदिरों में टी.वी. आदि के माध्यम से सभी श्रद्धालु समारोह का सीधा प्रसारण देख सकें। ताकि देशवासी आयोजन से सीधे जुड़ सकें। त्रेता युग में लंका विजय के बाद हुये भगवान राम के राज्याभिषेक की भाँति इस प्राण-प्रतिष्ठा आयोजन से भी पूरे देशवासियों को सांस्कृतिक रूप से जोड़ने की व्यवस्था की दृष्टि से पूरे भारत को 45 प्राँतों में व्यवस्था की गई है।

विभिन्न प्रान्तीय भाषाओं/बोलियों में दो करोड़ आमंत्रण पत्र तैयार कराये गए हैं। विश्व हिन्दू परिषद और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सहयोग से ये अक्षत कलश और आमंत्रण पत्र विभिन्न प्राँतों में पहुँच गये हैं तथा वितरण कार्य आरंभ हो गया है। जन्म स्थान मंदिर से पूरे देश को सांस्कृतिक और सामाजिक रूप से जोड़ने का यह पहला प्रयास नहीं है। आंदोलन और कार सेवा के लिये भी देशभर से कार्यकर्त्ता गए थे। शिला पूजन और निर्माण के लिये देशभर की सभी पवित्र नदियों का जल भी अयोध्या भेजा गया था। लगातार आक्रमणों और आक्राताओं के विध्वंस के बीच यदि भारत राष्ट्र की संस्कृति जीवन्त है तो वह सांस्कृतिक जागृति से संभव हुई। इसमें सामाजिक संगठन के एकत्व से विशेष योगदान है। ❑❑❑

प्रतिष्ठा में,

प्रकाशक एवं मुद्रक नरेन्द्र जैन द्वारा विश्व संवाद केन्द्र महाकौशल न्यास, प्लॉट नं. 1692, नव आदर्श कॉलोनी के लिए ग्रेनेडियर्स एसोसिएशन प्रिंटिंग प्रेस, जबलपुर द्वारा मुद्रित प्रकाशन स्थान विश्व संवाद केन्द्र, प्लॉट नं. 1692, नव आदर्श कॉलोनी, गढ़ा रोड, जबलपुर मध्य प्रदेश दूरभाष 0761–4006608, संपादक –डॉ. किशन कछवाहा